an>

Title: Need to set up an effective mechanism to curb trafficking of children in the country.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) ः देश में हर साल हज़ारों बच्चे लापता होते हैं जिनमें से कुछ ही अपने घर लौट पाते हैं। ज्यादातर गुमशुदा बच्चे अखबार के कोने में छपी खबर में दर्ज होकर रह जाते हैं। ये गुमशुदगी भयानक नहीं होती बल्कि इसके तार सुनियोजित रूप से अपराध जगत से जुड़े हैं। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार जिन बच्चों का पता नहीं लगता है, वे वास्तव में लापता नहीं होते बल्कि उनका अवैध व्यापार किया जाता है। रिपोर्ट इस तथ्य की ओर भी इशारा करती है कि 80 प्रतिशत पुलिस के लोग गायब होने वाले बच्चों की तलाश में कोई रूचि नहीं दिखाते। नोबल पुरस्कार विजेता और बचपन बचाओ आंदोलन संस्था के अध्यक्ष कैलाश सत्यार्थी कहते हैं कि जो बच्चे गायब हो रहे हैं इन्हें गुमशुदा बच्चे कहना सही नहीं है। ये बच्चे गुम नहीं होते बल्कि इनको चुराया जाता है। देश में बच्चों के रहस्यमय ढंग से लापता होने की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में सरकार से मेरा आग्रह है कि इस अपराध पर रोक लगाने हेतु तत्काल प्रभावी कदम उठाएं।